परमात्म ऊर्जा

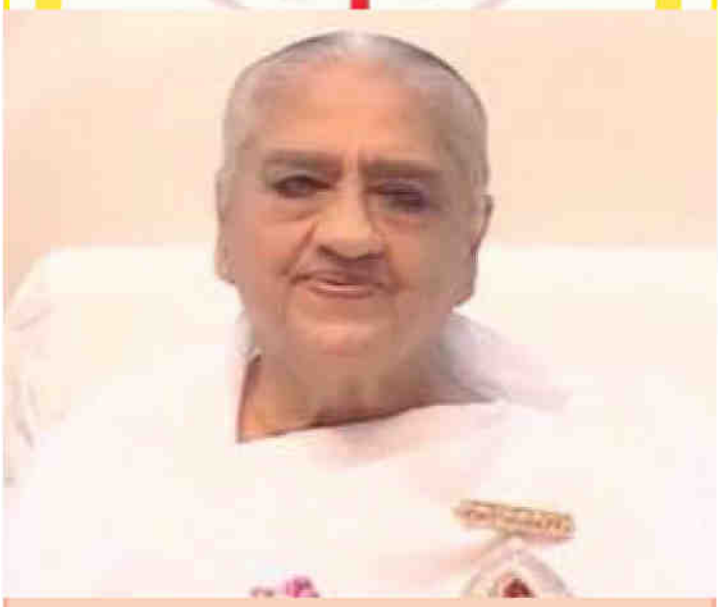

जो लक्ष्य रखा जाता है उसको पूर्ण करने के लिए ऐसे लक्षण भी अपने में भरने हैं। ढीले कोशिश वाले कहाँ तक पहुंचेंगे? कोशिश शब्द ही कहते रहेंगे तो कोशिश में ही रह जायेंगे। एम तो रखना है कि करना ही है। कोशिश अक्षर कहना कमज़ोरी है। कमज़ोरी को मिटाने के लिए कोशिश शब्द को मिटाना है। निश्चय से विजय हो जाती है। संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है। निश्चयबुद्धि बनेंगे तो सभी का सहयोग भी मिलेगा। कोई भी कार्य करना होता है तो सदैव यही सोचा जाता है कि मेरे बिना कोई कर नहीं सकता तब ही सफलता होती है। आज से कोशिश अक्षर खत्म करो।

मैं शिवशक्ति हूँ। शिवशक्ति सभी कार्य कर सकती है। शक्तियों की शेर पर सवारी दिखाते हैं। किस भी प्रकार माया शेर रूप में आये डरना नहीं है। शिवशक्ति कभी हार नहीं खा सकती। अभी समय ही कहाँ है। समय के पहले अपने को बदलने से एक का लाख गुणा मिलेगा बदलना ही है, तो एसे बदलना चाहिए। याद आता है कि अगले कल्प भी वर्सा लिया था। अपने को पुराना समझने से, वह कल्प पहले की स्मृति आने से पुरुषार्थ सहज हो जाता है। क्योंकि निश्चय रहता है कल्प पहले भी मैंने लिया था। अब भी लेकर छोड़ेंगे। कल्प पहले की स्मृति शक्ति दिलाने वाली होती है। अपने को नए समझेंगे तो कमज़ोरी के संकल्प आयेंगे। पा सकेंगे व नहीं। लेकिन मैं हूँ ही कल्प पहले वाला इस स्मृति से शक्ति आयेगी। सदैव अपने को हिम्मतवान बनना चाहिए। हिम्मत हारना नहीं चाहिए। हिम्मत से मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है।

बाप को याद करना सहज है व मुश्किल? सहज करने में सहज हो जाता है। यह तो मेरा कर्त्तव्य है, फर्ज़ है। क्या करूँ यह संकल्प आने से मुश्किल हो जाता है। कभी भी अपने अन्दर कमज़ोर संकल्प को नहीं रहने देना। अगर मन में कमज़ोर संकल्प उत्पन्न भी हो जायें तो उनको वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनना है। अब तक भी अगर कोशिश करते रहेंगे तो अव्यक्त कशिश का अनुभव कब करेंगे? जब तक कोशिश है तब तक अव्यक्त कशिश अपने में नहीं आ सकती है। यह भाषा ही कमज़ोरी की है। सर्वशक्तिवान के बच्चे यह नहीं कह सकते। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय के होंगे। ऐसी स्थिति बनानी है।

सदैव चेक करो कि संकल्प रूपी फाउंडेशन मजबूत है। तीव्र पुरुषार्थी की चलन में यह विशेषता होगी,उनके संकल्प, वाणी, कर्म तीनों ही एक समान होंगे। संकल्प ऊंच हों और कर्म कमज़ोर हों तो उनको तीव्र पुरुषार्थी नहीं कहेंगे। तीनों की समानता चाहिए। सदैव यह समझना चाहिए। जो कि माया कभी-कभी अपना रूप दिखाती है यह सदैव के लिए विदाई लेने आती है। विदाई के बदले निमंत्रण दे देते हो। सदैव शिवबाबा के साथ हूँ, उनसे अलग होंगे ही नहीं तो फिर कोई क्या करेंगे। कोई बिजी होता है तो फिर और कोई उनको डिस्टर्ब नहीं करता है। समझते हैं तंग करने वाला कोई नहीं आये तो एक बोर्ड लगा देते हैं। आप भी ऐसा बोर्ड लगाओ तो माया लौट जाएगी। आने का स्थान ही नहीं मिलेगा। कुर्सी खाली होती है तो कोई बैठ जाता है।

जिंतूर-महा.। महाशिवरात्रि के अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन के मार्गदशन में कार्यक्रम एवं विशाल शोभा यात्रा का आयोजन हुआ। इस मौके पर चार ठाणा से ब्र.कु. नंदा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कथा सरिता

लड़के और लड़की में कभी भेद न हो

एक गांव में रामसिंह और पदमा पति-पत्नी रहते थे। कुछ समय बाद उनका बच्चा होने वाला था। पदमा हॉस्पिटल में भर्ती थी। नर्स ने रामसिंह को आकर खुशखबरी दी कि आपके जुड़वां बच्चे हुए हैं।

रामसिंह ने कहा कि दो-दो लड़के! लेकिन नर्स ने कहा कि एक लड़का और एक लड़की। रामसिंह लड़की नहीं चाहता था क्योंकि लड़की की शादी में होने वाले खर्चे से वह डरता था। 2-4 दिन के बाद रामसिंह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अपने घर पर आ गया।

वह ज़्यादातर लड़के को ही खिलाता था। पदमा को यह बात पसंद नहीं थी। एक दिन रामसिंह अपनी पत्नी से बोला कि हम दो-दो बच्चों का खर्च नहीं उठा सकते। हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है।

इसके अलावा लड़की की शादी में होने वाले खर्चे को भी हम नहीं उठा सकते इसलिए हम लड़की को मेरे मित्र को सौंप देते हैं। जिसकी कोई संतान नहीं है। वह हमारी लड़की को हम से भी अच्छे से पालेगा क्योंकि वह बहुत अमीर है।

पदमा ने अपनी लड़की को देने से मना किया लेकिन रामसिंह के कहने पर दुःखी मन से उसने अपनी लड़की को रामसिंह को सौंप दिया। रामसिंह ने लड़की को अपने मित्र व उनकी बीवी को सौंप दिया। बच्चा पाकर वह बहुत खुश हुए।

इसके बाद समय बीतता गया, रामसिंह अपने लड़के को अच्छे से पाल रहा था

और उसकी हर इच्छा को पूरा करता था। लड़का जब 20 वर्ष का हुआ तो उसने रामसिंह से बाइक दिलाने की ज़िद्द की।

रामसिंह ने अपनी बीवी के गहने बेचकर उसको बाइक दिला दी। कुछ समय बाद उसने अपने लड़के के लिए खेत बेचकर एक दुकान खुलवा दी। जिससे वह कुछ कमाने लग गया। फिर कुछ समय बाद उसकी शादी भी करा दी।

शादी के बाद रामसिंह के लड़के का व्यवहार बदल गया। वह अपने पिता से बोला आप मेरे ससुराल वालों को ताना मत मारा करो। रोज़-रोज़ वह किसी बात पर अपने माँ-बाप से झगड़ा करता था।

एक दिन उसने रामसिंह और पदमा दोनों को ही उन्हीं के घर से निकाल दिया। बहुत समझाने पर भी वह नहीं माना। रामसिंह और उसकी पत्नी एक मंदिर में गए। वहाँ पहुंच कर पदमा ने रामसिंह को कहा कि मंदिर का प्रसाद खा लेते हैं।

जब वह प्रसाद ले रहे थे तो वहाँ पर रामसिंह के मित्र की पत्नी आ गयी। उसने रामसिंह को पहचान लिया। उसने अपनी उसी बेटी से रामसिंह को मिलवाते हुए बताया कि यह वही है जिसको आपने 25 वर्ष पहले हमको सौंपा था।

आज यह एक डॉक्टर है और वृद्धाश्रम भी चलाती है। रामसिंह और पदमा अपनी बेटी से मिलकर बहुत खुश हुए और अपनी सारी बात अपनी बेटी को बताई। इसके बाद वह बोली कि अब आप दोनों मेरे साथ ही रहेंगे।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी लड़के और लड़की में भेदभाव नहीं करना चाहिए।

सच्चा रक्षक

एक बार की बात है बादशाह अकबर का दरबार लगा था। जिसमें अकबर ने कहा कि आलू सब्जियों में बहुत प्रयोग किया जाता है, आलू सब्जियों का राजा है कौन ऐसा व्यक्ति होगा जिसको आलू पसंद नहीं होगा! आलू को हम बार-बार खा सकते हैं। दरबार में उपस्थित सभी लोग बादशाह अकबर के समर्थन में बोलने लगे लेकिन बीरबल चुप थे।

अकबर ने पूछा बीरबल क्या तुम मेरी बात से सहमत नहीं हो? बीरबल ने कहा महाराज आलू सब्जियों में बहुत प्रयोग अवश्य किया जाता है लेकिन बहुत-सी सब्जियां हैं जिसका प्रयोग हम कर सकते हैं। आप बार-बार केवल इसी को नहीं खा सकते।

इसके बाद अकबर ने बीरबल को कहा कि तुमको पता नहीं मुझसे क्या समस्या है तुमको मेरी बात ज़रूर काटनी है। मैं तुमको नहीं समझ पाया और न ही तुम्हारे हिन्दू धर्म को जिसमें कहा जाता है कि भगवान ने खुद संसार को बनाया है लेकिन किसी व्यक्ति को मुसीबत आ जाती है तो वह खुद बचाने धरती पर आ जाते हैं वह और किसी को क्यों नहीं भेज देते! बीरबल ने कहा इसका उत्तर मैं आपको कुछ दिन में दूंगा।

अकबर ने कहा कि तुम्हारे पास कोई उत्तर ही नहीं है। अगले दिन की बात है शाम के खाने में अकबर और बीरबल बैठे थे, रसोईया खाना लेकर आया जिसको देखकर बादशाह अकबर हैरान हो गए क्योंकि भोजन में हरेक व्यंजन आलू का ही बना हुआ था।

अकबर ने गुस्से में कहा कि यह सब पकवान केवल आलू का ही क्यों बना हुआ है, चिकन कबाब कहाँ है? रसोइए ने कहा हजूर आपको आलू बहुत पसंद है ना इसलिए सब केवल आलू का बना है।

अकबर ने कहा तुमको यह बनाने को किसने बोला, तो बीरबल ने कहा कि यह सब मैंने बनाने के लिए बोला था क्योंकि आपने बोला था कि मैं बार-बार आलू खा सकता हूँ। अकबर ने ठीक है मैं मानता हूँ कि आलू मुझे पसंद है लेकिन मैं केवल यही नहीं खा सकता।

इसके कुछ दिन बाद बादशाह अपने मंत्रियों और बीरबल के साथ बगीचे के तालाब के नज़दीक घूम रहे थे। एक दासी एक छोटे बच्चे को हाथ में लिए थी जो कि अकबर का बेटा था। अकबर वहीं टहल रहे थे कि तभी बच्चा दासी के हाथ से तालाब में गिर गया वह चिल्लाई,राजकुमार पानी में गिर गया।

सभी हड़बड़ाए लेकिन अकबर तुरंत बच्चे को बचाने के लिए पानी में कूद गए। वह उसको बाहर निकाल लाये जिसके बाद उससे कपड़ा हटा कर देखा तो उसमें राजकुमार की जगह खिलौना था। अकबर ने पूछा यह किसने हमारे साथ मज़ाक किया है?

बीरबल ने कहा हजूर यह मेरे कहने पर किया गया है। अकबर ने बोला यदि तुमने इसकी कोई खास वजह नहीं बताई तो तुमको इसका दंड भुगतना पड़ेगा। बीरबल ने कहा पहले आप यह बताइये कि राजकुमार के पानी में गिरने पर आपने किसी और को बचाने के लिए क्यों नहीं भेजा,आप खुद क्यों गए?

इस पर राजा ने बोला कि जब मेरा बेटा पानी में गिर गया तो मैं किसी और को बोलूँगा कि खुद उसको बचाने जाऊंगा, तुम कैसी बात कर रहे हो! बीरबल ने बोला इसी तरह हमारे धर्म में भी जब किसी व्यक्ति को मुसीबत आती है तो भगवान खुद उसको बचाने आते हैं किसी और को भेजने की बजाय।

अकबर बीरबल की बात समझ चुके थे। बीरबल ने कहा राजकुमार बिल्कुल सुरक्षित हैं और मैं इस सबके लिए माफी मांगता हूँ।